

ब्राह्मण-कर्कटक कथा

किसी नगर में ब्रह्मदत्त नामक एक ब्राह्मण रहता था। एक बार किसी काम से उसे दूसरे गाँव जाना पड़ा। उसकी माँ ने कहा, "पुत्र, तुम अकेले मत जाओ। किसीको साथ ले लो।" ब्राह्मण ने कहा, "माँ, इस रास्ते में कोई ऐसा डर नहीं है। मैं अकेला ही चला जाऊँगा।"

फिर भी चलते समय उसकी माँ एक केकड़ा पकड़ लाई और बोली, "तुम्हें जाना ही है, तो इस केकड़े को साथ ले जाओ। एक से दो भले। समय पड़ने पर काम आएगा।" ब्राह्मण ने माँ की बात मान ली और केकड़े को कपूर की पुड़िया में रखकर अपने झोले में डाल लिया।

भयंकर गरमी पड़ रही थी। परेशान होकर ब्राह्मण रास्ते में एक पेड़ की छाया में लेट गया। उसे नींद आ गई। उसके सो जाने पर उस पेड़ के नीचे बिल से एक साँप निकला। वह ब्राह्मण के पास आया तो उसे कपूर की गंध आने लगी। वह ब्राह्मण के झोले में घुस गया और कपूर की पुड़िया मुँह में भरकर उसे निगलने का प्रयत्न करने लगा। पुड़िया खुल गई। बस, केकड़े ने तुरंत अपने तीखे पंजों से दबोचकर साँप को मार दिया।

ब्राह्मण की आँख खुली तो वह हैरान रह गया। कपूर की पुड़िया के पास ही मरे हुए साँप को देखकर वह समझ गया कि केकड़े ने ही साँप को मारकर उसकी जान बचाई है। उसने सोचा, अगर मैं माँ की आज्ञा न मानता और उस केकड़े को साथ न लाता, तो आज मेरी जान नहीं बचती।

सीख: राह का साथी कोई भी हो समय पर सहायक होता है।

कहानी सुनाकर चक्रधर ने कहा, "इसलिए कहता हूँ कि यात्रा में कोई दुर्बल व्यक्ति भी साथ हो, तो वह समय पर सहायक होता है।"

चक्रधर की यह बात मानकर सुवर्णसिद्धि ने उससे बिदा ली और लौट पड़ा।

शुद्ध-कुरुएक कथा

किमी नगर में शुद्ध नभक एक शुद्ध ररुड घा। एक मर किमी काम में उसे दुभरें गीव रन पडा। उमकी भी ने कडा, "पुड, उम मुकेले भउ रडा। किमीके भाष ले ले।" शुद्ध ने कडा, "भी, उम रामु में केरें रिभा रु नकी कै। मैं मुकेला की गला रउंगा।"

द्वि री गलउे मभय उमकी भी एक केकड पकड लारें उर गेली, "उमं, रन की कै, उे उम केकड के भाष ले रडा। एक में री रुले। मभय पडने पर काम मुएगा।" शुद्ध ने भी की मउ भान ली उर केकड के कपुर की पुशिया में रापकर मपने ऐले में राल लिया।

रुयंकर गरभी पड रली थी। परमान केकर शुद्ध रामु में एक पेरु की काया में लेए गया। उसे नींद मु गरें। उमके में रने पर उम पेरु के नींद मिल में एक भीप निकला। वरु शुद्ध के पाम मुया उे उसे कपुर की गण मुने लगी। वरु शुद्ध के ऐले में भुम गया उर कपुर की पुशिया भेरु में रुकर उसे निगलने का प्यड करने लगा। पुशिया पल गरें। मभ, केकड ने उरंउ मपने डीपे पंरें में रनेकर भीप के भार दिया।

शुद्ध की भीप पली उे वरु कैरान ररु गया। कपुर की पुशिया के पाम की भरे कर भीप के टापकर वरु मभय गया कि केकड ने की भीप के भारकर उमकी रन मरारें कै। उमने भेगा, मगर मैं भी की मुह न भानउा उर उम केकड के भाष न लाउ, उे मुए भेरी रन नकी गउडी।

भीप : गरु का भाषी केरें री के मभय पर मरुयक डेउ कै।

.....
कडा नी मुनाकर एरुएर ने कडा, "उमलिर कडउा कै कि यरु में केरें ररुल वृकि री भाष के, उे वरु मभय पर मरुयक डेउ कै।"

एरुएर की वरु मउ भानकर मुवळभिदि ने उममें रिटा ली उर लेए पडा।

मनुवाए - पुगवा ररु